International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-01-2023, Accepted: 27-01-2024, Published: 13-02-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 10-11

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

गायत्री मुंजाजी पांचाळ
हिंदी विभाग, शोध छात्र, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, छत्रपती संभाजीनगर महाराष्ट्र, भारत

सारांश
तत्कालीन आधुनिक परवेश में जनसामान्योंका जीवन समस्याओं से घिरा गया हैं। जनता को अपना जीवन जीतो समय कई समस्यांओ का सामना करना पडता है। ऐसे मे किसी आदर्श पुरष का उदाहरण सामने हो तो जीवन जीने मे सुलभता होती है। तत्कालीन पारिवारिक समस्याओसे भरे जीवन मे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवनचरित्र के अमूल्य नीतिदर्शक तत्वों का स्वीकार कर युवापिढी सुख शांति से जीवन बिता सक्ती है।

मूल शब्दः मर्यादा पुरुषोत्तम, अलौकिक, लौकिक, निर्गुण, सगुण

मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय इतिहास के जाज्वल्यमान रत्न है। श्रीराम चरित्र की विशेषताएं व्यक्ति और समाज दोनों के लिए जीवनमूल्य की दृष्टि से अनुकरणीय होने से रामायण को भारत तथा विश्व में उच्च कोटि का स्थान प्राप्त हुआ है। श्रीराम चरित्र के उच्च गुणों के संघनन तथा साहित्यिक उत्कृष्टता की उपलब्धियों ने उनकी कीर्ति सीमाओं को पार कर दिया है। प्रभु राम को हम उनके प्रसिद्ध कुल या प्रसिद्ध राजा के पुत्र रूप में नहीं जानते बल्कि उनके विशिष्ट व्यक्तित्व एवं उच्चतम गुणों से पहचानते है। श्रीराम का नाम लेते ही हमारे समक्ष एक आदर्श व्यक्तिमत्व उभरकर आता है। रामायण के व्यक्तिचित्रों में प्रभु श्रीरामचंद्र एक आदर्श महामानव मर्यादा पुरुषोत्तम जनवादी शासक तथा ऐतिहासिक पुरुष रहे है। विश्व के सर्वोत्तम गुणसमुदायों का नायक है, श्रीराम का जीवन चरित्र। श्रीराम नाम लेते ही गुणों की सुची हमारे सामने प्रकट होती है। श्रीराम एक धर्मज्ञ, वीर, विनयी, नीतिवान, पराक्रमी, आत्मविश्वासु, कर्तव्यदक्ष, बलवान, धैर्ययुक्त, जितेन्द्रिय, सत्यवादी, प्राणिहित में तत्पर, वेदज्ञाता, धनुर्वेद में कुशल, प्रियदर्शन, गम्भीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के सदृश, पराक्रम में विष्णु के तुल्य, क्रोध में कालाग्नि जैसे, क्षमा में पृथ्वीसम दान करने में कुबेर एवं सत्य बोलने में दूसरे धर्म के समान है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन आध्यात्मिक एवं धार्मिक दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही किंतु उनके समग्र जीवन से सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक एवं राजनैतिक ऐसे अनेक पहलू हमें नजर आते है।। हमारे दैनंदिन एवं व्यावहारिक जीवनशैली में उनका चरित्र उद्धारक एवं मार्गदर्शक है। श्रीरामचंद्र का जीवन सत्यनिष्ठा, संयम, मातृपितृ भक्ति एवं प्रेम का अनूठा उदाहरण है। इस चरित्र के पठन से पाठकों के मन पर आध्यात्मिक भाव एवं आदर्श जीवन मूल्यों की नींव बनी रहती है।

हिंदी साहित्य क्षेत्र में श्रीराम की जीवनी पर आधारित रचनाएं विविध आलोचकों द्वारा रची गई है। उनमें कवि केशवदास कृत रामचंद्रिका में भाषा व अलंकारों का सौष्ठव तथा मैथिलीशरण गुप्त के साकेत में सहज लौकिकीकरण मिलता है। तथा अन्य प्रमुख रचनाएं जैसे अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, कृतिवास रामायण, प्रतिमा नाटक, महावीर चरित, मिथिला भाषा रामायण, रामावतार चरित, कुमुदेंदू रामायण, भावार्थ रामायण, रामचरितमानस तथा दशरथ जातक आदि राम पर आधारित प्रमुख रचनाएं है। इनके अलावा चीन, इंडोनेशिया, जापान, कंबोडिया, लाओस, मलेशिया, थाईलैंड, नेपाल, श्रीलंका में भी रामपर विविध रचनाएं उपलब्ध है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम युगो से भारतीय जनमानस की श्रद्धा का केंद्र एवं संस्कृति का मूलाधार रहे है ५ भारतीय जनता के आराध्य श्रीराम प्रभु की जीवनी सामान्य लोगों के लिए नीतिमूल्यों की पथदर्शनी है। श्रीराम प्रभु की कथा श्रवण करने से सामान्य जनता को मोक्षप्राप्ति होने की बात सर्वज्ञात है। ऐसी मान्यता है कि श्रीराम कथा श्रवण एवं रामनाम स्मरण मात्र से ही व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है। रामायण के नायक श्रीराम महाविष्णु के अवतार होकर उन्होंने जनता के बीच रहकर सामान्यो की भाँति व्यवहार किया। रामायण के महानायक प्रभु श्रीराम अलौकिक होते हुए भी उन्होंने लौकिक रुप में सामान्य मनुष्यों की तरह ही बर्ताव किया। इसके अनूठा उदाहरण हमें विविध रामायणों में प्राप्त होते है। अनेक रामकथाकारों ने अपनी बुद्धिचातुर्य के बल पर राम के गुणों को विविध रूपों में दर्शाया है। तथा उनके अलौकिक एवं लौकिक रूपों पर प्रकाश डाला है।

अलौकिक रूप

रामायण के नायक प्रभु श्रीराम के अलौकिक रूप याने ब्रह्मस्वरूप को (सगुण ब्रह्म) सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है। महाकाव्य नायक के सभी लक्षणों से युक्त श्रीराम का चरित्र होते हुए भी विद्वान उनमें अलौकिकता के दर्शन करते है।

"अलौकिक रूप में वे निर्गुण ब्रह्म और सगुन विष्णु है"[1]

निर्गुण ब्रह्म

निर्गुण ब्रह्म वास्तव में निर्गुण, निर्विकार, निराकार, अनादि, अनंत, अनाकलनीय एवं अवर्णनीय है।

"एक अनीह अरुप अनामा। अज सच्चिदानंद परधामा" [2]

निर्गुण निराकार होते हुए भी भक्तों के हितार्थ वह सगुण भी बन जाते है। सगुण इसलिए भक्तों के रक्षणार्थ वे सगुण रूप याने राम के रूप में अवतार लेते है।

सगुण ब्रह्म

संत तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस में प्रभुराम के निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण विष्णु इन दोनों रूपों में प्रकट होने की बात स्पष्ट की है।

"व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुण बिगत बिनोद। सो अज प्रेम भगति बस कौशल्या के गोद।।"[3]

रामकथा के रचनाकारोंने राम के अलौकिक रूप (ब्रह्म स्वरूप) को स्वीकार करते हुए अपनी कथा में अनेक प्रसंगोंपर उनके रूप की अनुभूति दर्शाई है। रामायण में विविध प्रसंगों में विभिन्न जगहों पर श्रीरामद्वारा राक्षसवध का कृत्य दर्शाया है। यहां पर श्रीराम द्वारा वध होने से उन राक्षसों को सायुज्य मुक्ति प्राप्त होने की बात रचनाकार बताते है। यह निर्विवाद सत्य बताते हुए कथाकार राम के अलौकिक तत्व को स्पष्ट करते है। श्रीराम में निहित शक्ति में उनका शारीरिक बल, शस्त्रास्त्र बल, उनके चमत्कारपूर्ण बाण तथा उनके द्वारा किए गए बलाढय् राक्षसों का वध ही उनकी अलौकिकता दर्शाता है। परशुराम के मानमर्दन, जयंत ताडना, प्रतिपक्ष का विनाश, खर दूषण त्रिशीरा जैसे चौदह हजार राक्षसों का वध, कबंध वध, दुन्दुभी राक्षस के अस्थियों का प्रक्षेपण और सप्तल भेद, बालि वध को लेकर रावण कुंभकरण सहित लंका के सभी राक्षस सेना का संहार कर श्रीराम अपनी अलौकिक शक्ति का परिचय देते है। रावण वध पश्चात अयोध्या में पुनरागमन करनेपर सभी आप्तेंष्टों से एक साथही मिलनकर सभी को संतुष्ट करना जैसे अनेक प्रसंगों में हमें उनके अलौकिक रूप के दर्शन होते है।

रामचरितमानस तथा अनेक रामकथाओं में श्रीराम के अवतार होने की बात कही है। पृथ्वी पर दुष्टों का संहार करने तथा धर्मरक्षण के कार्य हेतु साक्षात परब्रह्म परमात्मा ने श्रीराम के रूप में अवतार लेने की बात मानस में तुलसी ने कही है। "जब जब होई धरम कै हानि। बाढ हि असुर अधम अभिमानी। तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा। हर हिं कृपानिधी सज्जन पीरा ।" [4]

महाराष्ट्र के संत एकनाथजी ने भी अपने ग्रंथ भावार्थ रामायण में श्रीराम के अवतार रूप होने की बात स्पष्ट की है।

"फेडावया देवांची साकडी। स्वधर्म वाढवावया वाढी।
नामे मोक्षाची उभवावया गुढी। सुर्यवंशा गाढी दशा आली"।। 43।। [5]

लौकिक रुप

लौकिक रुप में विष्णु जी ने राम के रूप में अवतार लिया है। श्रीराम जी धीरोदत्त नायक है। उनके चरित्र में भी धीरोदत्त् नायक की शास्त्रोक्त सभी विशेषताएं विद्यमान है।

"वे कुलीन, सुंदर, विनम्र, सरल, मधुर, प्रिय बोलनेवाले, तेजस्वी, त्यागी, क्षमाशील, सहानुभूतिपूर्ण, सहिष्णु, बुद्धिमान, नीतिवान, धैर्यवान है"। [6]

उनमें अलौकिकता एवं धीरोदत्त नायक की विशेषताएं होकर भी वे सामान्य मनुष्यों की तरह जीवन जीते है। सामान्य मनुष्यों के सामने एक आदर्श प्रस्थापित करने के लिए प्रभु जीवन जीने की राह दिखाते है। प्रभु ने ब्रह्म स्वरूप होकर भी कहीं पर भी अपनी शक्ति का प्रचलन नहीं किया। प्रभु के लिए तो हर समस्या का समाधान पल भर में मिलता है किंतु प्रभु को सामान्य मनुष्य की तरह रहने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। प्रभु ने सर्वज्ञात होकर भी अज्ञात बनकर गुरु वशिष्ठ से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया तथा विश्वामित्रद्वारा भी मंत्रसिद्धियाँ प्राप्त की। पंचवटी में वे सीता की सुवर्णमृग की चमड़ी से बनी कंचुकी पहनने की चाँह सामान्य मनुष्यों की तरह पूरी करने के लिए मृग के पीछे दौड़ते है। रावण द्वारा सीताहरण होनेपर वे सीता की खोज करते समय सामान्य मनुष्य की तरह विलाप करते है। ऐसे अनेक प्रसंगों में श्रीराम के अलौकिक होते हुए भी उनके लौकिक रुप के दर्शन होते है।

रामकथाके रचनाकारों को श्रीराम के ईश्वरत्व् पर पूर्ण विश्वास था लेकिन उन सबने श्रीराम का चित्रण एक सामान्य मनुष्य के रूप में ही किया। इसका समर्पक उत्तर देते हुए रचनाकार बताते है। कि तत्कालीन समाजव्यवस्था में चल रहे पारिवारिक मनमुटाव तथा संघर्षों के वातावरण में मार्गदर्शक सहाय्य होने के लिए किसी आदर्श की समाज को आवश्यकता थी और वह मार्गदर्शक है। श्रीराम का जीवन चरित्र। श्रीराम प्रभुका संपूर्ण जीवन बाल्यकाल से प्रयाणकाल तक का धर्म एवं मर्यादा से ओतप्रोत है। श्रीराम प्रभु मानवीय मूल्यों की मर्यादा का प्रतिनिधित्व करते है। वे अपने जीवन में किसी भी घटना में मर्यादापूर्ण ही व्यवहार करते है। श्रीरामचंद्रजी उनके राज्याभिषेक की खबर से न–हीं प्रसन्न होते है तथा कैकई के द्वारा मिले वनवास के दुःख का उनपर लेशमात्र भी प्रभाव नहीं दिखता। वे जीवन की हर एक परिस्थिति में स्थिर रहते है। स्थिरता उनका मुख्य लक्ष्ण है। वे अपने जीवन में समानता मूल्य को भी उच्च स्थान पर रखते है। कैकई द्वारा उन्हें वनगमन की आज्ञा होने पर भी वे उनसे उसी प्रेमभाव से मिलते है। जैसे वे माता कौशल्या एवं सुमित्रा से मिलते है। विमाता कैकई के किए गए कृत्यदवारा भी वे उनके प्रति बर्ताव में जरा भी बदलाव नहीं लाते। तथा भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न सभी भाइयों को समान प्रेम भाव से मिलते है। भरत के कारण उन्हें वनगमन जाना पड़ा इस बात से वे जरा भी नाराज नहीं हुए, तथा उसी प्रेम आलोक से वे उनसे चित्रकूट में मिले। तत्कालीन विवाहव्यवस्था अनुसार राजा की अनेकों पत्नियों की प्रथा थी किंतु सीता के वनगमन पर भी वे एक पत्निव्रत धर्म का पालन करने में तत्पर रहें। तथा अनेकों यज्ञोमें वे सीताकी स्वर्णमूर्ति ही पूजा में बिठाते है। रावण वध पश्चात सीता के लौटने पर सीता के चरित्र पर जब अयोध्यावासी तथा कैकई के द्वारा संदेह उत्पन्न किया जाता है। तब वे राजधर्म निभाने हेतु सीता को वन में पुनः भेजते है। प्रजापर कोई कुप्रभाव ना पड़े इसलिए राजधर्म निभाने में वे अग्रस्थान पर रहे है। पति धर्म से ज्यादा उन्होंने राजधर्म निभाने को महत्व दिया। इसमें उनके परहित की भावना परिलक्षित होती है।

मर्यादा का अर्थ सम्मान और न्याय परायण है। तथा पुरुषोत्तम का अर्थ सर्वोच्च व्यक्ति है। मर्यादा पुरुषोत्तम का अर्थ है सम्मान में सर्वोच्च् व्यक्ति। इसलिए श्रीराम प्रभु को विश्व भर के लोग मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से ही पहचानते है। श्रीराम प्रभु को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है क्योंकि उन्होंने कभी भी, कहीं भी अपने जीवन में मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। माता, पिता, गुरु की आज्ञा का पालन करने में भी वे कभी भी अपने मुख से क्यों शब्द का उपयोग करके अस्वीकार्यता नहीं दिखाते। सीता खोज के कार्य में लंका जाते समय वे सागर को एक ही बाण से सुखा सकते थे लेकिन उन्होंने लोक कल्याण को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए विनयभाव से समुद्र को मार्ग देने की विनती की। श्रीराम ने अपने जीवन काल में मानव, पशु, तिर्यक वर्ग के प्राणियों में कभी भी भेदभाव नहीं किया। सभी वर्ग के प्राणियों को अपना समान आशीष दिया। जैसे शबरी, जाम्बवंत, हनुमान, अंगद, सुग्रीव, विभीषण आदि प्रभु श्रीराम का संपूर्ण जीवनचरित्र पूर्णतः समन्वयवादी तथा आदर्शपूर्ण है। वर्तमान युग में भगवान के आदर्शो को जीवन में अपनाकर मनुष्य प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पा सकता है। उनके आदर्श विश्वभर के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

संदर्भ सूची

1. रामचरितमानस और रामावतार चरित का तुलनात्मक अध्ययन शीला रैना अलीगढ उत्तर प्रदेश पृ.109
2. रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 12 (2) गोस्वामी तुलसीदास
3. रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 198 गोस्वामी तुलसीदास
4. रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा 120 (घ) 3,4 गोस्वामी तुलसीदास
5. भावार्थ रामायण बालकाण्ड अध्याय ओवी 43 पृ.17 संत एकनाथ
6. रामचरित मानस मे चरित्र सृष्टि, डॉ. योगेश दुबे पृ.38